जब पल्लवी बुआ सुल्ताना बनीं

हरजिन्दर सिंह 'लाल्टू'

पल्लव चाचा याद हैं न? अरे वही मीत के चाचा, हैदराबाद वाले। उनकी बहन पल्लवी बुआ तिरुवनन्तपुरम में इसरो में काम करती हैं। इसरो मतलब जहाँ महाकाश में उड़नखटोला भेजने का काम करते हैं। अँग्रेज़ी में इंडियन स्पेस रीसर्च वगैरह कहते हैं न, इसलिए पहले अक्षरों यानी ISR व O से बना इसरो। तो इस बार जब दशहरे की छुट्टी में वो मीत के घर आईं, तो प्रीतो और शबनम चार छलाँगें मारकर उनके घर जा पहुँचे। मीत ने बताया था कि पल्लवी बुआ केले का हलवा लेकर आई हैं, कहते हैं कि बड़ा लज़ीज़ होता है। वैसे भी पल्लव चाचा मज़ेदार कहानियाँ सुनाते हैं तो पल्लवी बुआ भी ज़रूर कहानी सुनाएँगी।

मौसम तो वैसे बाहर खेलने का है, पर केले का हलवा चखने का बड़ा मन कर रहा है। इस बार छुट्टियों में होमवर्क भी कम है। टीचर्स को भी पता है कि दशहरे में मेले-वेले घूमने के बाद बच्चों के पास पढ़ने-लिखने का वक्त कहाँ होता होगा!

जितना सोचा था, पल्लवी बुआ उससे ज़्यादा प्यारी निकलीं। शबनम को तो गोद में उठाकर चूमा। गोद में से ही शबनम ने पूछा, "बुआ, आप भी हमें पल्लव चाचा जैसी कहानी सुनाएँगी?"

पल्लवी बुआ बोलीं, "अरे यार, कहानी-वहानी मुझे कहाँ आती है!"

प्रीतो से रहा नहीं गया, बोली, "हमें क्लास में मैडम ने बताया था कि चन्द्रायन का काम सब वैज्ञानिक आंटियों ने किया था, आप रॉकेट की कहानी बताइए न!"

"अच्छा वो, यहाँ तक खबर पहुँच गई? हाँ, महाकाश-यान यानी स्पेस-विहिकल पर तो मैंने काम किया है। अच्छा चलो, सुनाती हूँ।"

"ये-ए-ए...," मीत ने चीखते हुए ताली बजाई।

"अरे, ज़रा आराम-से बैठो, मुझे सोचने दो।" सब चुप बैठे रहे। पल्लवी बुआ खिड़की से बाहर देख रही थीं, जहाँ हल्की धूप में कदम्ब के पेड़ के पत्ते शरद की हवा में झूम रहे थे।

"चलो, फिर मैं तुम्हें रज़िया सुल्ताना से मिलने की कहानी सुनाती हूँ।"

प्रीतो बोली, "धत्! आप रज़िया सुल्ताना से कैसे मिल सकती हैं, वो

तो एक हज़ार साल पहले दिल्ली की रानी थीं।"

"अरे, यही तो महाकाश में घूमने का मज़ा है, तुम चाहो तो हज़ार साल पहले या आगे चली जा सकती हो।" प्रीतो ने सिर झुका लिया, क्योंकि उसके होंठों पर ना-यकीनी की मुस्कान थी और वह नहीं चाहती थी कि पल्लवी बुआ देख लें।

शबनम ने अचरज से पूछा, "आप रॉकेट में एक हज़ार साल पीछे चली गई थीं? अगर मैं रॉकेट चलाऊँ तो मैं भी जा सकती हूँ?"

"यह तो तुम्हारे रॉकेट पर है, अगर वो ले जाए तो ज़रूर जा सकती हो शब्बो! पर अब तुम चुप होकर यह कहानी सुनो।"

पल्लवी बुआ ने आँखें बन्द कीं। हर कोई चुपचाप इन्तज़ार में था कि वे आगे क्या कहेंगी। सिर्फ प्रीतो अपने मोबाइल फोन पर विकीपीडिया देखने लगी थी कि रज़िया सुल्ताना के बारे में वहाँ क्या जानकारी है। इसी बीच में मीत की मम्मी सबके लिए केले का हलवा ले आईं। पर प्रीतो के अलावा किसी ने मानो देखा ही नहीं। प्रीतो ने चम्मच से हलवा मुँह में डाला। वाह! यह तो वाकई स्वादिष्ट है।

पल्लवी बुआ ने आँखें खोलीं और सामने चाय की प्याली देखी। चाय सिर्फ उनके लिए आई थी। उन्होंने चाय की चुस्की ली और बोलीं, "देखो, रॉकेट में क्या होता है कि एक बटन होता है जिसे दबाकर टाइम में आगे-

पीछे जा सकते हैं, जैसे चाहो तो तुम गाँधीजी से मिल सकते हो या देश के अगले प्रधानमंत्री से मिल सकते हो।"

'चाचा, बुआ, दोनों के एक-जैसे नाम, और दोनों महा गपोड़ी,' प्रीतो ने मन ही मन सोचा, 'चलो, सुनते हैं, क्या कहती हैं।'

"तो, भविष्य में जाने का मेरा कोई मन नहीं था, मुझे हमेशा इतिहास की कहानियाँ अच्छी लगती हैं, इसलिए मैं पीछे की ओर चली।"

मीत की अम्मी भी मुस्कराती हुई बैठ गईं।

पल्लवी बुआ उनकी ओर देखकर जैसे आँखों ही आँखों में कुछ बोलीं और ज़ोर-से हँस पड़ीं।

"तो, मुझे तो पता नहीं था कि मैं कितना पीछे जा रही हूँ। और मेरा रॉकेट वाला जहाज़ भँवर में फँस गया और अचानक मानो ज़मीन से टकराकर खड़ा हो गया।"

शबनम के गले से चीख-सी निकली।

"मैंने जब जहाज़ का दरवाज़ा खोला तो खुद को एक जंगल में पाया। मैं दो-चार कदम ही चल पाई थी कि मुझे कुछ लोगों ने घेर लिया। उनके हाथों में बर्छियाँ थीं। शक्ल से वे सिपाही जैसे लग रहे थे, पर जैसे इतिहास की किताब में से निकल आए हों। सर पर टोपी जैसी पगड़ियाँ, चुस्त पाजामों पर कुर्ते जिन पर अँगोछे बँधे हुए थे। उन्होंने थोड़ी देर मेरी ओर देखा, फिर पता नहीं क्या कानाफूसी की और सब मेरे सामने ज़मीं पर लेटकर कुर्निश करने लगे। पहले तो मैं डर गई, पर उन्हें लेटे हुए देखकर हिम्मत आई और मैंने पूछा, 'तुम लोग कौन हो?' उनमें से एक उठकर खड़ा हुआ और बोला, 'हम अमीर-अल-उमरा जमालुद्दीन याकूत के वफादार सिपाही हैं। मैं इस टुकड़ी का मुखिया गुणवन्त हूँ और ये सब मेरे साथ हैं'।"

"इतना बड़ा नाम?" मीत ने पूछा।

"अरे नहीं, नाम तो बस जमालुद्दीन याकूत था। उसे अमीर-अल-उमरा की पदवी मिली थी, मतलब वह अमीरों का अमीर था।" प्रीतो जानती थी कि किसी को कुछ समझ नहीं आया, पर वो चुप रही।

"तो फिर वे बोले, 'ऐ मलिका-ए-हिन्द, सुल्ताना बखूब अल-दुनिया, गुलाम की गुस्ताखी माफ करें, हमें समझ नहीं आ रहा है कि आप यहाँ इस लोहे की झोपड़ी में क्या कर रही हैं और आपके ये लोहे के घोड़े कहाँ से आए'।"

पल्लवी बुआ दो पल रुकीं और मुस्कराते हुए बोलीं, "मेरे जहाज़ से निकलते ही साथ में दो रोबोट भी निकल पड़े थे न, उन्हीं को देखकर उन्हें लगा कि ये लोहे के घोड़े हैं। और वो रोबोट इधर-उधर घूम रहे थे। उनमें से एक अचानक बोल पड़ा - 'क्या हम इन हमलावरों को खत्म

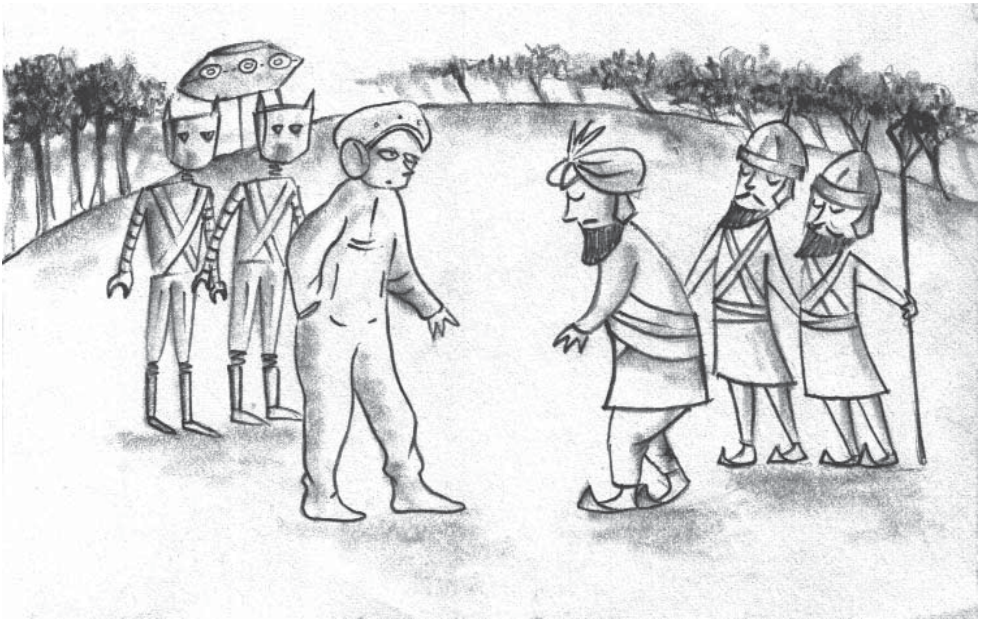

कर दें?' उसकी बात उन सिपाहियों की समझ में तो नहीं आई, पर वे उसे इस तरह बोलते सुनकर उछलकर खड़े हो गए और घबराकर काँपने लगे। मैंने रोबोट को समझाया कि 'ये अच्छे सिपाही हैं, इनके साथ हमें लड़ना नहीं है'।"

अब शबनम का ही नहीं, मीत का भी मुँह पूरा खुला हुआ था। प्रीतो का मन हुआ कि अचानक उनके मुँह में उँगली डाल दे, पर वह चुप बैठी रही।

फिर बुआ बोलीं, "मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें मेरा नाम पता है?"

"गुणवन्त झुककर बन्दगी करते हुए बोला, 'आपका नाम कौन नहीं जानता मलिका-ए-हिन्द, आप रज़िया सुल्ताना यानी रज़िय्यात-उद्-दुनिया-वा-उद्दीन हैं, समूचे हिन्द की अवाम की सरपरस्त नूर-ए-सल्तनत'।"

"अब धीरे-धीरे मुझे समझ में आया कि उन्होंने मुझे रज़िया सुल्ताना समझ लिया था। मैंने उनसे कहा कि भई मुझे भूख लगी है, चलो कुछ खाते-पीते हैं।"

"'जो हुक्म मलिका' कहकर, वे मेरे आगे-पीछे ऐसे खड़े हो गए, जैसे कोई शाही सवारी हो। गुणवन्त एक सफेद घोड़े की लगाम पकड़े खड़ा था कि मैं उस पर बैठ जाऊँ। मैं थोड़ा घबराई, पर मैंने अपने एक रोबोट से कहा, 'इधर आओ और मुझे घोड़े पर चढ़ाओ।' रोबोट पास आया तो

गुणवन्त डरकर परे हट गया। मैं घोड़े पर चढ़कर उनके साथ चली। करीब दस मिनटों में ही हम एक शिविर में पहुँचे। मुझे देखकर शिविर के सामने खड़े सभी सिपाही कानाफूसी करने लगे और सलाम करते हुए सावधान की मुद्रा में खड़े हो गए। मैं घोड़े से उतरी और शिविर के अन्दर गई। जाने से पहले अपने दोनों रोबोट से मैं कह गई कि जब तक मैं न बुलाऊँ वो बाहर ही रहें। और अन्दर जाते ही मैंने देखा कि - ओ माई गॉड! वहाँ बिलकुल मेरी शक्ल की एक औरत जवाहरातों से लदी एक सिंहासन पर बैठी थी। उसके साथ नीचे शानदार गलीचे पर तकिए पर पीठ टिकाए एक साँवला आदमी बैठा था। रानी ने मुझे देखा और गुस्साई-सी बोली, 'मुझे मेरे जासूसों से खबर मिली कि मेरे जैसी शक्ल की कोई औरत सुल्ताना बनी घूम रही है। कौन हो तुम? जल्दी बताओ, नहीं तो इसी पल तुम्हारा सर कलम करवा दूँगी।' मैं समझ गई कि यही रज़िया सुल्ताना है और वह साँवला आदमी उसका करीबी दोस्त याकूत है।"

"शिविर में बस हम तीन थे। उनके पास खुली तलवारें पड़ी थीं। एक पल के लिए लगा कि अब तो मैं दुनिया से कूच करने वाली हूँ, यहाँ से ज़िन्दा निकलना नामुमकिन है। मैंने सिर झुकाया और काँपते हुए बोली, 'ऐ

मलिका-ए-हिन्द, मेरी ऐसी कोई मंशा नहीं है कि मैं सुल्ताना बनूँ। मैं किसी और दुनिया से आई हूँ। आप चाहें तो एक मिनट बाहर आकर देखें, मेरे रोबोट आपको सब समझा देंगे'।"

"रज़िया झटके-से उठीं, एक बार याकूत की ओर देखा और शिविर से बाहर आ गईं। मैं और याकूत उसके पीछे आए।"

"रज़िया ने दोनों रोबोट को देखा। मैंने उनसे कहा, 'इनको बतलाओ कि हम कौन हैं और यहाँ कैसे आए हैं'।"

"एक रोबोट बोला, 'हमने इनकी ज़बान सीखने की कोशिश की है। अभी हमारे प्रोसेसर इस पर काम कर रहे हैं। इसलिए हम थोड़ा बहुत ही समझा पाएँगे'।"

"इतना कहकर थोड़ी फारसी, थोड़ी तुर्की में वह रोबोट रज़िया को हमारे वक्त यानी हमारी-तुम्हारी दुनिया के बारे में बताने लगा। कुछ ही पलों में रज़िया ज़ोर-से हँसने लगीं और फिर कहा, 'अच्छा बेवकूफ बनाया है तुम्हारी मालकिन ने हमें। तुम लोग सच कह रहे हो तो मुझे भी दिखाओ कि वो दुनिया कैसी है जिसकी मनगढ़न्त कहानी तुम कह रहे हो'।"

"रोबोट ने मुझसे कहा, 'दीदी, आप कुछ देर यहाँ बैठें, हम इनको इक्कीसवीं सदी दिखा लाते हैं'।"

"मैं घबरा रही थी, पर अब कोई रास्ता तो था नहीं। इधर गर्दन पर तलवार लटकी हुई थी। याकूत ने रज़िया के कानों में कुछ कहा। रज़िया ने तुरन्त हुक्म दिया, 'सब लोग सुनें। मैं थोड़ी देर में वापस आती हूँ, तब तक ये मुहतरमा दिल्ली जाकर सल्तनत सँभालेंगी'।"

"बस, फिर क्या था," कहकर पल्लवी बुआ ने ताली बजाई। "मैं दिल्ली पहुँची और सिंहासन पर जाकर बैठी। पर बाप रे, वहाँ तो हर पल खतरा था। याकूत आकर बताता कि सब अमीर-उमरा तखता पलटने का षड़यन्त्र कर रहे हैं। डर के मारे मुझे रात को नींद न आती थी। पर वो ऐश – ओ हो! जब दरबार लगता तो क्या शानो-शौकत थी।"

"आप तो हर वक्त केले का हलवा खाती होंगी?" शबनम ने पूछा तो बुआ ज़ोर-से हँस पड़ीं। "अरे, तब तो क्या-क्या पकवान मैंने खाए, क्या बताऊँ। बकलावा हलवा, डबल-का-मीठा, क्या नहीं!"

प्रीतो बोल पड़ी, "पर उन्हें 'डबल' किसको कहते हैं, यह तो नहीं पता था!" बुआ ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

फिर बुआ बोलीं, "पर आखिर हमें वहाँ से भागना पड़ा। एक सूबेदार ने दिल्ली पर हमला जो कर दिया था। उसी लड़ाई के दौरान रज़िया को लेकर मेरा जहाज़ वापस आ पहुँचा। रज़िया जहाज़ से उतरीं तो देर तक 'तौबा, तौबा' कहती रहीं। उन्हें हमारी

सदी के लोग पसन्द नहीं आए। खैर, फिर पता नहीं वहाँ क्या-क्या हुआ, मैं तो दौड़कर जहाज़ में घुस गई और यह देखो, अब यहाँ बैठी हूँ।"

"तुम्हारे रोबोट कहाँ हैं, हमें भी दिखाओ न?"

"अरे, मुझे क्या पता था कि तुम्हें यह सारी कहानी सुनाऊँगी। अगली बार आऊँगी तो दोनों को साथ लाऊँगी।"

प्रीतो से रहा न गया, "बुआ, आपको तो अन्तरिक्ष विज्ञानी नहीं, दास्तानगो होना चाहिए था।"

पल्लवी बुआ उदास-सी हो गईं। फिर बोलीं, "चलो, मैं नहीं बन पाई तो तुम तो ज़रूर बनना।"

मीत की अम्मी बोल पड़ीं, "वाकई! चलो, अब सब अपने घर जाओ। बुआ को आराम करने दो।"

लौटने से पहले फिर एक बार शबनम पल्लवी बुआ की बाँहों में थी। प्रीतो का भी मन हुआ कि वह भी शबनम की तरह पल्लवी बुआ से लाड़-प्यार करे, पर काश कि वह भी वक्त में पीछे जाकर शबनम जैसी बच्ची हो पाती।

हरजिन्दर सिंह 'लाल्टू': सेंटर फॉर कम्प्यूटेशनल नेचुरल साइंस एंड बायोइन्फॉर्मेटिक्स, आई.आई.आई.टी., हैदराबाद में प्रोफेसर। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, न्यू यॉर्क, यूएसए से पीएच.डी.। सन् 1987-88 में *एकलव्य* के साथ यूजीसी द्वारा स्पेशल टीचर फैलोशिप पर हरदा में रहे। आप हिन्दी में कविता-कहानियाँ भी लिखते हैं।

सभी चित्र: सौम्या मैनन: चित्रकार एवं एनिमेशन फिल्मकार। विभिन्न प्रकाशकों के साथ बच्चों की किताबों एवं पत्रिकाओं के लिए चित्र बनाए हैं। बच्चों के साथ काम करना पसन्द करती हैं।